

NATIONAL CURRICULUM FRAMEWORK

2005 NCF-2005

Notes

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 NCF-2005

मार्गदर्शक सिद्धान्त :-

- ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना ।
- पढ़ाई रटत त्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चित करना।
- पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन कि वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए बजाए इसके कि वह पाठ्य-पुस्तक केन्द्रित बन कर रह जाए।
- परीक्षा को अपेक्षकत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना ।
- एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य-व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिंताएँ समाहित हो ।

सीखना और ज्ञान

- समाज से मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा, विद्यार्थी में अपना ज्ञान स्वयं सृजित करने की स्वाभाविक क्षमता को विकसित करती है ।
- बाल केन्द्रित शिक्षा शास्त्र का अर्थ है बच्चों के अनुभवों, उनके स्वयं और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना ।
- हमारे स्कूल के शैक्षिक अभ्यास, सिखाने के कार्य और विद्यार्थियों के लिए बनाई गई पाठ्य पुस्तकें, उनके समाजीकरण और उनके सीखने में ग्रहणशीलता के गुण पर केन्द्रित होते हैं जबकि हमें उनकी सक्रियता व रचनात्मक सामर्थ्य को पोषित और संवर्द्धित करना चाहिए ।
- सभी बच्चों का स्वस्थ शारीरिक विकास सभी प्रकार के विकास की पहली शर्त है।
- सभी बच्चों की स्वतंत्र खेलों अनौपचारिक व औपचारिक खेलों, योग और खेल की गतिविधियों में सहभागिता उनके शारीरिक व मनोसामाजिक विकास के लिए आवश्यक है।
- सभी बच्चे स्वभाव से ही सीखने के लिए प्रेरित होते हैं और उनमें सीखने की क्षमता होती है।
- अर्थ निकालना, अमूर्त सोच की क्षमता विकसित करना, विवेचना व कार्य, अधिगम की प्रक्रिया के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू हैं ।
- बच्चे व्यक्तिगत स्तर पर एवं दूसरों से विभिन्न तरीकों से सीखते हैं-
अनुभव के माध्यम से स्वयं चीजे करने व स्वयं बनाने से, प्रयोग करने से, पढ़ने, विमर्श करने, पूछने, सुनने उस पर सोचने व मनन करने से तथा गतिविधि या लेखन के जरिए अभिव्यक्त करने से। अपने विकास के मार्ग में उन्हें इन सभी तरह के अवसर मिलने चाहिए ।

- बच्चे मानसिक रूप से तैयार हो, उससे पहले ही उन्हें पढ़ा देना, बाद की अवस्थाओं में उनमें सीखने की प्रवृत्ति को प्रभावित करता है। उन्हें बहुत से तथ्य 'याद' तो रह सकते हैं परन्तु संभव है कि वे न तो उन्हें समझ पाएँ न ही उन्हें अपने आसपास की दुनिया से जोड़ पाएँ। स्कूल के भीतर व बाहर दोनों जगहों पर सीखने की प्रक्रिया चलती है। इन दोनों जगहों में यदि संबंध रहे तो सीखने की प्रक्रिया पुष्ट होती है।
- किशोरावस्था अस्मिता के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण समय है
- आस पास के वातावरण, प्रकृति, चीजों व लोगो से कार्य व भाषा दोनों के माध्यम से अन्तः क्रिया करना सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।

भाषा

- बच्चों में भाषा की जन्मजात क्षमता होती है।
- ज्यादातर बच्चे, स्कूल की शिक्षा की शुरुआत से पहले ही भाषा की जटिलताओं और नियमों को आत्मसात कर पूर्ण भाषिक क्षमता रखते हैं। कई बार जब बच्चे स्कूल आते हैं तो उनमें पहले से ही दो या तीन भाषाओं को समझने या बोलने की क्षमता होती है।
- यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे की सहज भाषायी क्षमता को पहचाने और याद रखें कि भाषाएँ सामाजिक सांस्कृतिक रूप से बनती हैं।
- त्रिभाषा फॉर्मूला भारत की भाषा- स्थिति की चुनौतियों और अवसरों को संबोधित करने का एक प्रयास है।
- द्विभाषिकता या बहुभाषिकता से निश्चित संज्ञानात्मक लाभ होते हैं।
- भाषा शिक्षण बहुभाषिक होना चाहिए।
- बच्चे की घरेलू भाषा स्कूल में शिक्षण का माध्यम होनी चाहिए।
- भाषा शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक ही सीमित नहीं है। गणित विकास या सामाजिक विज्ञान की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की ही कक्षाएँ हैं।
- कहानी, कविता, गीतों और नाटकों के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते हैं।

द्वितीय भाषा सीखना

- अंग्रेजी शिक्षण का लक्ष्य ऐसे बहुभाषी लोगो को तैयार करना है जो हमारी भाषाओं को समृद्ध कर सकें।
- भाषा तब सीखी जाती है जब वह भाषा के रूप में नहीं पढ़ाई जाती बल्कि सार्थक संदर्भों से जोड़कर उसे पढ़ाया जाता है। इसलिए अंग्रेजी को अन्य विषयों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए।
- निवेश समृद्ध संप्रेषण का वातावरण भाषा शिक्षण की पूर्व शर्त है, चाहे वह पहली भाषा हो या दूसरी।
- शिक्षार्थी की प्रगति का निरंतर मूल्यांकन होना चाहिए और पोर्टफोलियो के रूप में उसका लेखन रखना चाहिए।
- भाषा, कौशलों के पुंज के रूप में चिंतन और अस्मिता के रूप में स्कूल के सभी विषयों में मौजूद है।
- समय से पहले सही उच्चारण का बोझ, बच्चे के खुलकर अपनी बोली में बात करने की क्षमता को कुण्टित करता है।

गणित-

- गणित की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चे की गणितीकरण की क्षमताओं का विकास करना है।
- इसके लिए ऐसी पाठ्यचर्या चाहिए जो महत्वपूर्ण हो, सुसंगत हो और गणित के महत्वपूर्ण सिद्धान्त को पढ़ाए। महत्वकाशी का अर्थ है कि वह उपरोक्त उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति का प्रयास करे।
- बच्चे गणित से भयभीत होने की बजाए उसका आनन्द उठाएँ।
- बच्चे महत्वपूर्ण गणित सीखें, गणित में सूत्रों व यांत्रिक क्रियाओं से आगे भी बहुत कुछ है।
- समस्या के समाधान की अनेक सामान्य युक्तियाँ स्कूल की विभिन्न अवस्थाओं में सिखाई जा सकती हैं: अमूर्तता, परिभाषण, सादृश्यता स्थिति विश्लेषण, समस्या को सरल रूप में बदलना, अनुमान लगाना व उसकी पुष्टि करना – ये समस्या समाधान के अनेक सन्दर्भों में उपयोगी हैं।
- गिनती को क्रम में रटने की बजाय बच्चों को यह सीखने और समझने की जरूरत है कि छोटे समुच्चयों के सन्दर्भ में नाम के खेल और संख्या में और गिनती एवं मात्रा में क्या जुड़ाव है।

विज्ञान

अच्छी विज्ञान शिक्षा बच्चे, जीवन व विज्ञान के प्रति ईमानदार होती है। यह सरल निष्कर्ष विज्ञान पाठ्यचर्या के निम्नलिखित वैध मानकों की ओर इंगित करता है:-

- संज्ञानात्मक वैधता के लिए आवश्यक है कि पाठ्यचर्या की विषयवस्तु, प्रक्रिया, भाषा व शिक्षा शास्त्रीय अभ्यास आयु के अनुरूप हो और बच्चे की संज्ञानात्मक पहुँच के भीतर आएँ।
- बच्चों के संज्ञानात्मक स्तर तक पहुँचने के लिए अन्तर्वस्तु को सरल तो किया जाए लेकिन उसे इतना हल्का नहीं बनाया जाए कि मूल जानकारी या तो गलत या निरर्थक हो जाएँ।
- ऐतिहासिक वैधता में आवश्यक है कि विज्ञान की पाठ्यचर्या एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण के साथ जानकारी दे ताकि विद्यार्थी यह समझ सकें कि समय के साथ विज्ञान की अवधारणाएँ कैसे विकसित हुईं।
- विज्ञान को विद्यार्थी के स्थानीय व वैश्विक दोनों के बृहद पर्यावरण के सन्दर्भ में रखा जाए।
- प्राथमिक अवस्था में बच्चे की व्यस्तता अपने चारों ओर की दुनिया की नयी नयी चीजें खोजने का आनन्द उठाने और उनके साथ सामंजस्य बैठाने में होनी चाहिए।
- उच्च प्राथमिक अवस्था में बच्चे के प्रमुख कार्य परिचित अनुभवों द्वारा विज्ञान के सिद्धान्त सीखना, हाथों से सरल तकनीकी इकाइयाँ या मॉडल बनाना और पर्यावरण व स्वास्थ्य जिसके अन्तर्गत प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य भी आता है, के बारे में और अधिक जानकारी हासिल करना होना चाहिए।

सामाजिक विज्ञान :-

सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत समाज के विविध सरोकार आते हैं। इसकी अन्तर्वस्तु बहुत विविध है जिसमें इतिहास, भूगोल, राजनीतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मानव विज्ञान जैसे विषयों की विषय वस्तु समाहित की जाती है।

- प्राथमिक स्तरों पर प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण को गणित और भाषा के अंतरंग भाग की तरह समझाया जाए। बच्चों को ऐसी गतिविधियों में लगाया जाए कि वे भौतिक, जैविक, सामाजिक और सांस्कृतिक रेखाकनों के माध्यम से वातावरण को समझ सकें।
- कक्षा 3 से 5 के लिए पर्यावरण अध्ययन के विषय की शिक्षा दी जानी चाहिए। प्राकृतिक वातावरण के अध्ययन में, उसके संरक्षण और क्षरण से बचाने की आवश्यकता पर जोर होना चाहिए।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर, सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु, इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र से मिलती है।
- समस्या समाधान, नाटकीकरण तथा भूमिका निर्वाह रोल प्ले कुछ ऐसी विधाएँ हैं जो उपयोग में लाई जा सकती हैं।
- शिक्षण में श्रुत्य-दृश्य सामग्री, तस्वीरें, चार्ट्स, नक्शे तथा पुरातत्वादी और भौतिक सांस्कृतिकों की प्रकृतियों जैसे संसाधनों का उपयोग किया जाना चाहिए।

भौतिक वातावरण

बच्चों से जब उनके पसन्द के स्थान के विषय में पूछा जाता है, तो अधिकतर वे उस स्थान पर रहना पसन्द करते हैं जो रंग-रंगीला, दोस्ताना और शांत हो। जहाँ ढेर सी खुली जगह हो साथ ही छोटे कोने हो, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे और खिलौने हो। बच्चों को आकर्षित करने के लिए विद्यालयों में इन चीजों का होना आवश्यक है।

स्थान - इन मानकों का संबंध आयु, समूह के आकार, शिक्षक शिक्षार्थी अनुपात और जिस प्रकार की गतिविधियाँ चलानी हैं, उनसे है।

भवन - भवन निर्माण सामग्री, वास्तुशैली और कारीगरी, स्थानीय जलवायु भूगोल उपलब्धता के आधार पर स्थल विशिष्ट और संस्कृति विशिष्ट होते हैं। जबकि जिसमें सुरक्षा और स्वच्छता पर किसी प्रकार का समझौता न किया गया हो।

कुर्सी - मेज - इसके मानक आयु तथा गतिविधियों की प्रकृति के आधार पर तय किए जाएँ जिसमें प्रयोगशालाओं तथा अन्य विशिष्ट गतिविधियों को छोड़कर ऐसे फर्नीचर को प्राथमिकता दी जाए जिन्हें आवश्यकतानुसार अलग अलग जगहों पर अलग तरह से उपयोग में लिया जा सके।

उपकरण - आवश्यक और वांछनीय उपकरणों की सूची बनाई जानी चाहिए जिसमें ऐसी स्थानीय सामग्रियों और उत्पादों के प्रयोग पर जोर हो जो संस्कृति विशिष्ट कम खर्चीली और आसानी से उपलब्ध हों।

समय - स्थान और आयु - विशिष्ट मानकों और मौसम के अनुसार समय सारणी बनाए जाने की आवश्यकता है गुणवत्ता को लेकर सरोकार - निम्न को प्राथमिकता दी जानी चाहिए-

- स्कूल को अपने स्तर पर सामग्री खरीदने, स्थानीय संस्थाओं के साथ सहयोग करने और अपने इलाके के अन्य स्कूलों को भी योजना में शामिल करने के लिए निर्णय लेने की क्षमता से लैस किया जाना।

- पाठ्यचर्या निर्माण और पुस्तकों की रचना के समय प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों के बीच आपसी तालमेल।
- इस प्रकार की सूचनाओं का विकास जिनमें स्कूली शिक्षक और उच्चतर शिक्षण संस्थानों के विषय विशेषज्ञ निर्माण और पाठ्यपुस्तकों की रचना में साथ साथ काम कर सके।
- गैर सरकारी संगठनों और निर्णयकारी संस्थाओं के बीच सहयोग।
- निर्णय के विभिन्न स्तरों एवं विभिन्न ढाँचों के बीच संप्रेषण और पारदर्शिता का विकास।
- बच्चों की आरम्भिक शिक्षा उनकी अपनी घरेलू भाषा में ही हो। अधिक उपयुक्त यह होगा कि बहुभाषी शिक्षा की व्यवस्था की जाए। उसी प्रकार मदरसा शिक्षा की पाठ्यचर्या को विस्तार देने के लिए अपनाई गयी नीतियों को मजबूत किए जाने की जरूरत है।
- शिक्षा सभी विद्यार्थियों के लिए अनुभव का पोषण करने वाली हो चाहे वे किसी भी सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक वर्ग से आते हों इसके लिए जरूरी है कि शिक्षक प्रशिक्षण की पाठ्यचर्या और पाठ्य पुस्तक निर्माण की प्रक्रियाओं के सन्दर्भ में ठोस कदम उठाए जाएँ।

शिक्षक का शिक्षा संबंधी दृष्टि

शिक्षक की शिक्षा को स्कूली व्यवस्था की उभरती माँगों के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए। उसे शिक्षकों को इसके लिए तैयार करना चाहिए कि वे निम्नलिखित रूप में अपनी भूमिका निभाएँ

- उनका उत्साहवर्धक, सहयोगी और मानवीय होना चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी संभवनाओं का पूर्ण विकास कर जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाएँ : और
- ऐसे व्यक्तियों के समूह का सक्रिय सदस्य बने जो लगातार सामाजिक और विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सजगता से पाठ्यचर्या सुधार में रत हों।
- इस दृष्टि को साकार करने के लिए, यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण में ऐसे तत्व समाहित हों जो विद्यार्थी शिक्षक को निम्न दिशाओं में सक्षम बनाएँ- सीखना किस प्रकार होता है, इसकी समझ उसमें हो और वह उसके अनुकूल माहौल बनाए।
- ज्ञान को व्यक्तिगत अनुभव के रूप में समझे जो सीखने- सिखाने के साझे अनुभव के रूप में प्राप्त किया जाता है, न कि पाठ्य पुस्तकों के बाह्य यथार्थ के रूप में।
- उन सामाजिक पेशेवर और प्राशसनिक संदर्भों के प्रति उनमें संवेदनशीलता हो जिनमें उसे काम करना पड़ता है।
- इस प्रकार की उपयुक्त क्षमताओं का विकास वह कर सके जिसमें वास्तविक स्थितियों में उसकी न केवल उपरोक्त समझ हो, बल्कि वह उनकी रचना भी कर सके
- भाषा की गहरी समझ और दक्षता हासिल करे।
- अपनी आकांक्षाओं, स्व - समझ: क्षमताओं और रुझानों को पहचाने।
- वह शिक्षक के रूप में पेशेवर उत्तुंगीकरण का प्रयास करें
- मूल्यांकन को सतत शैक्षिक प्रक्रिया माने।

- कला शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में कला और सौन्दर्यबोध समझ का विकास कर सके ।
- वंचित बालकों और विभिन्न असमर्थताओं वाले बच्चों की आवश्यकताओं सहित सभी बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं को समझ सके ।
- परामर्श के कौशल और क्षमताओं का विकास कर सके ताकि बच्चों के शैक्षणिक, व्यक्तिगत और सामाजिक स्थितियों का समाधान सुझाने में उसे सुविधा हो।

शिक्षक के लिए आवश्यक तैयारी

- शिक्षकों की ऐसी तैयारी जरूरी है कि वे बच्चों का ख्याल कर सकें और उनके साथ रहना पसन्द करें।
- सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक सन्दर्भों में बच्चों को समझ सकें ।
- ग्रहणशील और निरन्तर सीखने वाले हो ।
- शिक्षा को अपने व्यक्तिगत अनुभवों की सार्थकता की खोज के रूप में देखे तथा ज्ञान निर्माण को मननशील अधिगम की लगातार उभरती प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करे ।
- ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के बाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा सन्दर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखे ।
- समाज के प्रति अपना दायित्व समझे और बेहतर विश्व के लिए काम करें।
- उत्पादक कार्य के महत्व को समझे तथा कक्षा के बाहर और अन्दर व्यवहारिक अनुभव देने के लिए कार्य को शिक्षण का माध्यम बनाए।
- पाठ्यचर्या की रूपरेखा, उसके नीतिगत- निहितार्थ एवं पाठों का विश्लेषण करे ।

महत्वपूर्ण बदलाव

पहले

1. शिक्षक केन्द्रित, स्थिर डिजाइन
2. शिक्षक का निर्देश और निर्णय
3. शिक्षक का मार्गदर्शन और प्रबोधन
4. निष्क्रिय भाव से सीखना
5. चार दीवारी के अन्दर सीखना
6. ज्ञान "प्रदत्त" और स्थिर है।
7. अनुशासन केन्द्रित
8. रैखिक अनुभव
9. मूल्यांकन - संक्षिप्त, कम

बाद में

- शिक्षार्थी केन्द्रित, लचीली प्रक्रिया
- शिक्षार्थी की स्वायत्ता
- शिक्षार्थी का सहयोग द्वारा / सीखने का प्रोत्साहन
- सीखने में सक्रिय भागीदारी
- विस्तृत सामाजिक सन्दर्भों में सीखना
- ज्ञान विकसित होता है, रचा जाता है
- बहु-अनुशासनात्मक शैक्षणिक दृष्टि
- बहुविध एवं विभिन्न अनुभव
- बहुविध सतत

आकलन में लचीलापन

तमाम मनोवैज्ञानिक आँकड़ों से यह पता चलता है कि विद्यार्थी अलग-अलग ढंग से सीखते हैं और सीखे हुए की जाँच की उनकी प्रस्तुति भी अलग-अलग होती है। इसलिए परीक्षा हाल में कागज-कलम में ली गई परीक्षा के अलावा मूल्यांकन के बहुविध रूप होने चाहिए। मौखिक परीक्षा और समूह कार्य मूल्यांकन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। खुली पुस्तक परीक्षा और लचीली समय सीमारहित परीक्षा को देश भर में प्रायोगिक तौर पर लागू किए जाने की जरूरत है।

चूँकि विद्यार्थियों की प्रकृति एक दूसरे से भिन्न होती है और शिक्षण की पद्धतियाँ भी अलग-अलग होती हैं, इसलिए अगले चरण में जाने के लिए हर विद्यार्थी से हर विषय में समान स्तर की माँग करना उचित नहीं है। भारत में ग्रामीण शहरी विभाजन के कारण इस माँग को सामाजिक दृष्टि से भी उचित नहीं कहा जा सकता।

सभी के लिए समान परीक्षा की पद्धति संगठित रूप से तो ठीक हो सकती है, लेकिन उसे विद्यार्थी केन्द्रित नहीं कहा जा सकता और न ही भारत के तेजी से उभरते रोजगार बाजार के अनुकूल जिसमें विविधताएँ बढ़ रही हैं।